S-0 Roll No. ……..

BAJY–101

ब्रह्माण्ड एवं काल

कला में स्नातक (ज्योतिष) बी. ए.-12/16/17

प्रथम वर्ष, सत्र 2018

समय : 3 घण्टा पूर्णांक : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो तीन (03) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. तारा एवं ग्रह को परिभाषित करते हुए प्राचीन मतानुसार ग्रहकक्षा क्रम को लिखिए।
2. त्रुट्यादि अमूर्त्तकाल एवं प्रणादि मूर्त्तकाल का विवेचन कीजिए।
3. तिथियों का नामोल्लेखपूर्वक तिथियों के सैद्धान्तिक स्वरूपों का वर्णन कीजिए।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए :

   (अ) मनुमान

   (ब) मानक समय

   (स) करण

   (द) धूमकेतु

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. उल्का किसे कहते हैं ? प्रमुख उल्काओं का नाम बताइये।
2. सूर्य के भौतिक स्वरूप का विवेचन कीजिए।
3. चान्द्र मासों का परिचय दीजिए।
4. गोल के कितने भेद होते हैं ? लिखिए।
5. नव्य मतानुसार ग्रहों के कक्षा क्रम को लिखिए।
6. नक्षत्रों के नाम लिखिए।
7. अक्षांश एवं लम्बांश को परिभाषित कीजिए।
8. स्वकल्पित उदाहरण के द्वारा देशान्तर मिनट का साधन कीजिए।

खण्ड–ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. मंगल के उपग्रहों की संख्या है :
   (अ) पाँच
   (ब) दो
   (स) तीन
   (द) चार

2. उत्तरायण का प्रारम्भ होता है :
   (अ) मेषादि से
   (ब) मकरादि से
   (स) तुलादि से
   (द) मीनादि से

3. एक कल्प में महायुगों की संख्या होती है :
   (अ) 1000
   (ब) 2000
   (स) 71
   (द) 100

4. निरक्ष प्रदेश में अक्षांश का मान होता है :
   (अ) 360 अंश

(ब) 180 अंश

(स) 0 अंश

(द) 90 अंश

5. स्थिर करण है :

(अ) बब

(ब) गर

(स) वणिज

(द) शकुनी

6. कृत्तिका नक्षत्र के बाद आता है :

(अ) रोहिणी

(ब) अश्विनी

(स) मघा

(द) मूल

7. एक चान्द्रमास में तिथियों की संख्या होती है :

(अ) 15

(ब) 25

(स) 30

(द) 45

8. नव्य मत में शुक्र की कक्षा के बाद है :

(अ) गुरु की कक्षा

(ब) पृथ्वी की कक्षा

(स) मंगल की कक्षा

(द) बुध की कक्षा

9. रेखादेश एवं स्वदेश का पूर्वापर अन्तर कहलाता है :
   (अ) स्पष्टान्तर
   (ब) देशान्तर
   (स) वेलान्तर
   (द) क्रान्त्यन्तर

10. मध्यमसूर्योदय एवं स्पष्टसूर्योदय का अन्तर है :
   (अ) वेलान्तर
   (ब) अक्षांश
   (स) चरान्तर
   (द) लंबांश